3

यीशु, पुराना नियम और आप

(5:17-20)

हम पहाड़ी उपदेश के एक नये भाग में आ गए हैं (5:17-48)। धन्य वचनों वाले भाग में (5:3-12) अन्य पुरुष[1] प्रमुख था ''धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है'' (आयत 3)। आठवें धन्य वचन को विस्तार देते हुए यीशु *मध्यम* पुरुष में बात करने लगा: ''धन्य हो *तुम,* जब मनुष्य मेरे कारण *तुम्हारी* निन्दा करे, और सताए'' (आयत 11)। मध्यम पुरुष का प्रभाव पूरे भाग में रहता है (आयतें 13-16): ''तुम पृथ्वी के नमक हो'';''तुम जगत की ज्योति हो'' (आयतें 13क, 14क)। तीसरे भाग (आयतें 17-48) में, मध्यम पुरुष (''तुम'') का इस्तेमाल जारी रहता है पर बल (उत्तम पुरुष ''मैं'') पर है। आरम्भिक भाग (आयतें 17-20) पढ़ें तो आप बार-बार ''मैं'' शब्द का इस्तेमाल देखते हैं: ''मैं आया हूं,'' ''मैं नहीं आया,'' ''मैं तुम से कहता हूं'' और एक और ''मैं तुम से कहता हूं।''

मत्ती 5:17-48 का ध्यान दिलाने वाला विषय मूसा की व्यवस्था (और व्यवस्था के यहूदियों के दुरुपयोग) के साथ यीशु का सम्बन्ध है। इस भाग का आरम्भ परिचायक भाग (5:17, 18) से होता है, जिसके बाद, पांच या छह उदाहरण[2] या परिचय में दिखाए गए नियमों के उदाहरण मिलते हैं। इस पाठ में हम आरम्भिक शब्दों पर विचार करेंगे। अगले पाठ में हम उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

यीशु परमेश्वर के वचन का आदर करता था (5:17, 18)

वचन पूरा होना (आयत 17)

हमारा वचन पाठ यीशु के यह कहने से आरम्भ होता है, ''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं'' (आयत 17क)। ''व्यवस्था'' और ''भविष्यवक्ता'' उस के जिसे हम पुराना नियम कहते हैं यहूदी लोगों द्वारा किए गए दो विभाजन थे।[3] दोनों शब्दों को कई बार पूरे पुराने नियम के लिए इस्तेमाल किया जाता है (तुलना करें मत्ती 7:12; 11:13; 22:40; यूहन्ना 1:45; प्रेरितों 24:14; 28:23), और उनका इस्तेमाल यहां उसी रूप में किया गया है। अनुवादित शब्द ''लोप'' (kataluo[4]) के ''नष्ट करना,'' ''मिटाना'' और ''रद्द करना'' सहित कई सम्भावित अर्थ हैं।[5] KJV ''नष्ट करना'' है।

यीशु को क्यों लगा कि यह कहना आवश्यक है कि वह व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं को मिटाने या नष्ट करने नहीं आया। उसका *सामान्य* उद्देश्य हो सकता है। सम्भव है कि यीशु की आलोचना पहले ही बढ़ रही थी। मत्ती ने यीशु और यहूदी धार्मिक अगुओं के बीच इससे पहले कि किसी झगड़े को नहीं लिखा, पर सुसमाचार के अन्य विचारों में इस बात का संकेत है कि

सब्त की परम्पराओं पर उसका पहले से उनके साथ झगड़ा था (देखें मरकुस 2:24; यूहन्ना 5:16, 18)। वे घटनाएं भविष्य में होने पर भी यह आवश्यक था कि यीशु यहूदी धार्मिक अधिकारियों के साथ पंगा लेता और देर-सवेर लोगों को मूसा की व्यवस्था की उपेक्षा करने को प्रोत्साहित करने का आरोपी ठहरता। इसलिए यीशु के लिए आवश्यक था कि अपनी सेवकाई के आरम्भ में ही व्यवस्था पर अपनी स्थिति स्पष्ट कर दे।

इस बात पर ज़ोर देने का कि वह व्यवस्था को नष्ट करने नहीं आया यीशु का *पहला* उद्देश्य इससे भी स्पष्ट था। वह चौंकाने वाली बातों की शृंखला यानी ऐसी बातें बताने वाला था जिनका अर्थ यह लिया जा सकता था कि उसके मन में मूसा की व्यवस्था के लिए कोई सम्मान नहीं था। उन बातों के कहने से पहले, उसने यह बता देना चाहा कि परमेश्वर की प्रगट इच्छा के लिए उसके मन में अत्यधिक सम्मान है।

इससे एक और सवाल आता है कि यीशु के यह कहने का क्या *अर्थ* था कि वह व्यवस्था को लोप करने नहीं आया। कई लोग इसे यह सिखाने के अर्थ में लेते हैं कि मूसा की व्यवस्था पूर्ण रूप में आज भी लागू है, जबकि पवित्र शास्त्र की कई बातें इसके विपरीत संकेत देती हैं। उदाहरण के लिए इब्रानियों 9 अध्याय "*पहली* वाचा" की बात करता है और फिर कहता है कि यीशु "*नई* वाचा का मध्यस्थ है" (आयतें 1, 15)। अगला अध्याय भी जिसने दोनों वाचाओं की बात की, कहता है, "वह *पहले को* उठा लेता है ताकि दूसरे को *नियुक्त* करे" (10:9ख)। पौलुस ने लिखा,

> क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार [मूसा की व्यवस्था] को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर [क्रूस पर] में बैर अर्थात वह *व्यवस्था* जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, *मिटा दिया,*[6] कि दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे (इफिसियों 2:14, 15)।

यीशु ने कहा कि वह व्यवस्था को मिटाने नहीं आया, पर पौलुस ने कहा कि उसने व्यवस्था को मिटा दिया। यह दोनों बातें आपस में मेल कैसे खा सकती हैं? डिनोमिनेशनों के लेखक जब पुराने नियम की व्यवस्था को "औपचारिक, न्यायिक,[7] नैतिक" अर्थात तीन श्रेणियों में बांटकर विभिन्न बातों को मिलाने का प्रयास करते हैं। इस ढंग को बढ़ावा देने वाले लोगों का कहना है कि औपचारिक नियम और न्यायिक नियम मिटा दिए गए हैं पर नैतिक नियमों को नहीं मिटाया गया। उनका सुझाव होता है कि मत्ती 5:17 में यीशु के कहने का अर्थ था कि वह नैतिक *व्यवस्था* को मिटाने नहीं आया। इस ढंग में कई दिक्कतें हैं। एक तो यह है कि मूसा की व्यवस्था का प्रस्तावित तिरहा विभाजन यहूदियों और आरम्भिक मसीही लोगों को मालूम नहीं था।[8] दूसरी दिक्कत यह है कि यीशु ने *नैतिक व्यवस्था* को मिटाने की कोई बात नहीं कही। उसने कहा कि वह *व्यवस्था* को मिटाने नहीं आया। आयत 18 में यीशु ने संकेत दिया कि उसके मन में एक-एक मात्रा या बिन्दु सहित "पूरी" व्यवस्था थी।

तीसरी दिक्कत को इस प्रकार बताया जा सकता है: कोई नियम औपचारिक, न्यायिक या नैतिक है, इसका निर्णय लेने का अधिकार किसे है? तीन श्रेणियों का प्रस्ताव देने वाले कई लोग

दस आज्ञाओं को पुराने नियम के नैतिक नियमों का सार बताते हैं। यदि ऐसा है और वे नैतिक नियम आज भी लागू हैं, तो हमें सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज लेने के बजाय सातवें दिन वाले सब्त को मनाना चाहिए। यदि एक धार्मिक गुट को पुराने नियम के सब्त को मनाने का अधिकार है, तो किसी दूसरे गुट को यह बताने का अधिकार कैसे है कि वे पुराने नियम की किसी और रीति को नहीं मान सकते? तीन श्रेणियों का यह ढंग समस्या को सुलझाने के बजाय इसे और बढ़ाता है।

स्पष्ट उलझन का समाधान ध्यान पूर्वक उन *सब* बातों पर विचार करने में मिलता है, जो यीशु ने मत्ती 5:17-20 में कही। उसका पहला वाक्य इन शब्दों से समाप्त होता है: ''मैं [व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं] को लोप करने नहीं आया'' (आयत 17ख)। अनुवादित शब्द ''पूरा करने'' (के यूनानी *pleroo*) का अर्थ ''भरना'' है।[9] आयत 17 में इस अर्थ की कई परछाइयां सम्भव हैं। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है:

1. '' *पूरा करना*=करना, ले जाना या
2. '' *पूरी अभिव्यक्ति लाना*=इसके वास्तविक [हर्ष] में सिखाना'' या
3. '' *भरना*=पूरा करना।''[10]

यदि हम संदर्भ के साथ बने रहें (आरम्भिक वाक्य के बाद के उदाहरणों से) तो ''पूरा करना'' का मुख्य अर्थ बीच वाले अर्थ ''पूरी अभिव्यक्ति लाना [व्यवस्था को] इसके वास्तविक [हर्ष] में सिखाना'' से ''भरना=पूरा करना।'' उदाहरण के लिए 27 और 28 में यीशु ने कहा, ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, यदि कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।'' व्यवस्था का उद्देश्य पाप की परिभाषा देने, उसे प्रगट करने, दोषी ठहराना और निरुत्साहित करना था (देखें गलातियों 3:19क)।[11] यह आज्ञा कि ''तू व्यभिचार न करना'' व्यभिचार को निरुत्साहित करने के लिए थी। जिस बात को लोगों ने नहीं समझा वह यह थी कि यदि व्यभिचार गलत है तो व्यभिचार को बढ़ाना देने वाली बात भी गलत है। मत्ती 5:27, 28 में इसे स्पष्ट किया। इसलिए एक अर्थ में उसने व्यभिचार के बारे में आज्ञा को पूरी तरह से समझाया।

पूरा किया जाना (आयत 18)

परन्तु हम अपने आपको ''पूरा करना'' की एक ही परिभाषा से नहीं जोड़ सकते। अब आयत 18 को देखें: ''क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुआ नहीं टलेगा।'' मैं इस वाक्य के अन्तिम वाक्यांश पर ध्यान दिलाना चाहता हूं, पर पहले इस आयत की एक और शब्दावली पर संक्षेप में टिप्पणी कर लूं:

- ''सच'' का अनुवाद यूनानी शब्द *amen* से किया गया है, ''मैं तुम से सच कहता हूं'' ''यीशु का अपना हस्ताक्षर है, जिसे किसी और गुरु द्वारा इस्तेमाल नहीं किया गया।'' मत्ती इसे 31 बार, यूहन्ना (दोहरे आमीन के साथ) 25 बार लिखता है। यह ... किसी बात को महत्वपूर्ण करने के साथ-साथ अधिकारात्मक भी बनाता है।[12] ''मैं

तुम से कहता हूं'' अध्याय 5 के शेष भाग का मुख्य शब्द है (आयतें 22, 26, 28, 32, 34, 39, 44)।

- ''व्यवस्था''–यहां इस्तेमाल हुआ शब्द पिछली आयत के ''व्यवस्था'' और ''भविष्यवक्ताओं'' के बराबर है। इसका अर्थ सम्पूर्ण पुराना नियम है।
- ''जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं'' ''किसी अविश्वसनीय मुहावरे से बढ़कर समय की विशेष टिप्पणी है।''[13] इन शब्दों को लूका 16:17 की समानान्तर आयत की अभिव्यक्ति से मिलाएं: ''आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। यीशु यह नहीं कह रहा था कि आकाश और पृथ्वी के टल जाने तक व्यवस्था लागू रहेगी।'' बल्कि वह यह ज़ोर दे रहा था कि ऐसा कोई *तरीक़ा* नहीं है कि व्यवस्था ''पूरा हुए'' और ''पूर्ण होने'' से *पहले* मिट जाए।
- ''एक मात्रा या एक बिन्दु'' का अनुवाद यूनानी वर्णमाला के सबसे छोटे अक्षर *iota* से किया गया है। इसमें सम्भवतया इब्रानी वर्णमान के सबसे छोटे अक्षर *yod* से किया गया है।[14] ''मात्रा या बिन्दी''[15] का अनुवाद ''सींग'' (*keraia*) के लिए शब्द से किया गया है। इस शब्द का ''इस्तेमाल एक इब्रानी अक्षर को दूसरे से अलग करने वाले छोटे नुकते का संकेत देने के लिए किया जाता था।''[16] दोनों शब्द पुराने नियम के प्रकाशन के सबसे छोटे भागों की बात करते हैं। मैंने यीशु के शब्दों को इस प्रकार कहे जाते सुना है: ''सब कुछ पूरा हुए बिना व्यवस्था की 'i' की बिन्दी या 't' की कट वाली लाइन भी नहीं मिटेगी।''

यह हमें ''सब कुछ पूरा होने तक'' की सर्शत वाक्यांश तक ले आया है। ''पूरा हुए'' का अनुवाद सामान्य यूनानी क्रिया *ginomai* अर्थात (''मैं बनता हूं''[17]) के भूतकाल (कृदंत से लिया गया है। विचार यह है कि जब तक सब बातें पूरी नहीं हो जाती)। KJV में NKJV में सब बातों के पूरा होने की बात है। जबकि अन्य अनुवादों में ''प्राप्त करने'' की (ASV; NASB; RSV; NIV)। ''प्राप्त करने'' शब्द में आयत 17 का ''पूरा होना'' शामिल है पर इसमें इससे बढ़कर है। मूसा की व्यवस्था तब तक लागू रहनी थी जब तक व्यवस्था के सम्बन्ध में सब बातें ''प्राप्त'' नहीं हो जातीं। यह कब और कैसे हुआ? पुराने नियम के प्रकाशन के सम्बन्ध में सब बातें यीशु के द्वारा प्राप्त की थीं, जैसा कि पहले सुझाव दिया गया है, कुछ उसकी शिक्षा के द्वारा प्राप्त हुई थीं, पर पूर्ण रूप में उसी में। यीशु के पृथ्वी पर आने का एक कारण उस सब को फल देना था, जो लोग व्यवस्था के द्वारा पाने की मंशा की गई थी।

यीशु ने व्यवस्था को पूरी तरह से मानकर इसे पूरा किया। (ऐसा करने वाला केवल वही अकेला था।) वह ''व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ'' यहूदी था (गलातियों 4:4), जो इसकी मांगों के अधीन था। उसके मन में मानव निर्मित यहूदी परम्पराओं के लिए सम्मान नहीं था पर उसने परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति पूरा पूरा सम्मान दिखाया। परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के उसके व्यवहार को उसके बपतिस्मे के समय कही गई उसकी बातों में दिखाया गया: ''हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'' (मत्ती 3:15)। यीशु ने वैसा जीवन दिखाया जैसा व्यवस्था चाहती थी कि व्यक्ति का होना चाहिए। उसके मुकदमे के समय कोई

उस पर दोष नहीं लगा पाया कि उसने आज्ञा को पूरा नहीं किया है (देखें मरकुस 14:55-59)।

यीशु ने व्यवस्था को इस बात में पूरा किया कि वह व्यवस्था के रूपों (परछाइयों) का प्रतिरूप था (देखें कुलुस्सियों 2:16, 17; इब्रानियों 8:4, 5; 10:1) *और मसीहा के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियों को पूरा किया था* (देखें लूका 24:27)।[18] उसने अपनी व्यक्तिगत सेवकाई का आरम्भ इस संदेश के साथ किया "समय पूरा हुआ है" के संदेश के साथ किया (मरकुस 1:15)। उसकी पृथ्वी की सेवकाई के सम्बन्ध में बार-बार कहा गया कि यह या वह बात "इसलिए हुई कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो" (मत्ती 1:22; देखें 2:23; 3:3; 4:14)।

सबसे बढ़कर, यीशु ने व्यवस्था को इस अर्थ में पूरा किया कि उसने पाप की व्यवस्था का समाधान और इसका दण्ड लेकर आया। व्यवस्था पाप की समस्या को प्रकाशमान करने के लिए दी गई थी पर इसका कुछ करने के लिए शक्तिहीन थी (देखें रोमियों 8:3)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के समय यीशु ने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया (देखें 2 कुरिन्थियों 5:21; गलातियों 3:13)। क्रूस पर उसकी अन्तिम पुकार थी "पूरा हुआ है!" (यूहन्ना 19:30)। न केवल उसका जीवन पूरा हुआ था बल्कि मनुष्यजाति के पापों के लिए बलिदान होने के लिए उसका मिशन (1 कुरिन्थियों 15:3) भी पूरा हो गया।

इसलिए यीशु ने उन पहले बताए दो अर्थों "*पूरा करना*-करना, ले जाना या और "पूरी अभिव्यक्ति लाना-इसके वास्तविक [हर्ष] में सिखाना" जब उसने इन तीनों अर्थों में व्यवस्था को पूरा किया तो उसने इसे "पूरा कर दिया।" पूरा हुए समझौते के रूप में पुरानी वाचा को कानूनी तौर पर एक और रखकर उसने नई वाचा ला दी। पौलुस ने लिखा कि "व्यवस्था ... अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने *तक* रहे," और उसने स्पष्ट किया कि वह "वंश" मसीह था (गलातियों 3:19, 16), पुनः पौलुस ने कहा कि "व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे" (गलातियों 3:24, 25)। व्यवस्था के विषय में हैरल्ड पाउलर ने लिखा है:

> ... यीशु द्वारा सब बातें पहले ही पूरी कर दी हैं (वास्तव में या प्रभावी रूप में), क्योंकि उसने अपने जीवन या संदेश, या कष्ट सहने या महिमा पाने में कलीसिया या अपने तेजोमय शासन में वे सभी नियम ठहरा दिए जिनसे परमेश्वर के [पुराने नियम] की सभी भविष्यवाणियों और मानक पूरे होने थे।[19]

यीशु ने "अपनी देह में" पुरानी वाचा को मिटा दिया (इफिसियों 2:15)। जब उसने इसे "क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है" (कुलुस्सियों 2:14)। उसी समय, यानी उसकी मृत्यु पर उसकी वाचा प्रभावी हो गई (देखें इब्रानियों 9:15-17)।

कोई आपत्ति कर सकता है: "एक मिनट रुको! आपने कहा कि यीशु पुराने नियम को मिटाने नहीं आया, बल्कि इसे पूरा करने के लिए आया। पर अब आप कह रहे हैं कि यीशु ने जब पुराने नियम को पूरा कर दिया, तो यह मिट गया। मुझे तो लगता है कि यह एक ही बात है, तो फिर फर्क क्या हुआ?" फर्क *परमेश्वर के वचन के प्रति व्यवहार* का है और यह बहुत

बड़ा फर्क है।

कल्पना करें कि आप और मैं एक अनुबंध करते हैं। उस अनुबंध में मैं आपको ''दी जाने वाली सेवाओं'' के लिए एक निश्चित अवधि तक तय राशि देने को सहमत होता हूं। अब आगे के दृश्य की कल्पना करें। यदि मैं घोषणा कर दूं कि मैं अनुबंध को पूरा नहीं करना चाहता, तो मैं उस समझौते को रद्द करने के लिए जो भी कर सकूं करूं? हो सकता है कि मैं आपके पास आकर आपकी आंखों के सामने उस अनुबंध को फाड़ दूं। इससे मेरे बारे में क्या पता चलेगा? आपके मन में इससे और उस समझौते के बारे में क्या समान होगा?

अब दूसरे दृश्य की कल्पना करें। एक अफ़वाह फैलती है कि मैं अनुबंध तोड़ना चाहता हूं, सो मैं आपके पास आकर आपको आश्वस्त करता हूं कि मेरी पूरी मंशा अपने समझौते को पूरा करने की है। इसके अलावा मैं उस अनुबंध का अपना भाग पूरा कर देता हूं और वचन के अनुसार पाई-पाई चुका देता हूं। इन दो दृश्यों को ध्यान में रखते हुए, इस पर विचार करें: जब मैंने अनुबंध पूरा कर दिया, तो अब यह लागू नहीं रहा। इसलिए दोनों मामलों में परिणाम एक ही है, या मिलता-जुलता कि मैं पैसे देने बन्द कर देता हूं। परन्तु मेरे व्यवहार में आपको बड़ा फर्क दिखाई नहीं देता? पहली घटना में मेरे मन में अपने समझौते के लिए कोई सम्मान नहीं है, पर दूसरे समझौते में मेरे मन में इसके लिए पूरा सम्मान है। पुराना नियम पूरी हुई वाचा बनने के बाद परमेश्वर के लोगों पर लागू नहीं रहना था। परन्तु इसके साथ यीशु ने चाहा कि हर किसी को पता चल जाए कि उसके मन में इसके लिए बहुत सम्मान था। परमेश्वर की व्यवस्था उसके स्वभाव की एक अभिव्यक्ति है।[20] कोई परमेश्वर का आदर करके उसकी व्यवस्था का अनादर नहीं कर सकता। इसलिए यीशु इसकी शर्तों को पूरा करने को समर्पित था।

हमें परमेश्वर के वचन का आदर करना चाहिए (5:19, 20)

बुरे और अच्छे उदाहरण (आयत 19)

यीशु ने अपने सुनने वालों को व्यवस्था का आदर वैसे ही करना सिखाया जैसे वह करता था। हमारे पाठ में आयत 19 में उसने आगे कहा:

> इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

''तोड़े'' उसी मूल शब्द से लिया गया है[21] जिसका अनुवाद आयत 17 में ''लोप करना'' हुआ है। आयत 19 में KJV में भी ''तोड़ना'' है। जब कोई जान-बूझकर व्यवस्था को तोड़कर उसके प्रति अनादर या अपमान दिखाता है तो वह दिखा रहा है कि उसकी नज़र में व्यवस्था अनावश्यक है। अपने कामों से उसने इसे ''लोप कर दिया'' है।

''इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक'' वाक्यांश की कुछ व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है। मूसा की व्यवस्था में यहूदी रब्बियों ने 613 नियम गिनाए हैं। 613 नियमों को याद रखना कठिन था, सभी का पालन करना तो बहुत दूर, सो उन्होंने नियमों को ''भारी''

(''वज़नदार,'' ''बड़े'') और ''हल्के'' (कम वज़न वाले) नियमों में बांट दिया। वे उन पर ज़ोर देते थे जिन्हें वे ''भारी,'' ''वज़नदार,'' या ''बड़े'' नियम कहते थे। फरीसियों को यह बताते हुए कि ''परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है'' (मत्ती 23:23)। वैसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया। ऐसी सोच व्यवस्थापक के यीशु से यह पूछने जैसी थी ''हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?'' (मत्ती 22:35; देखें आयतें 35-40)। जब यीशु ने ''इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से एक'' कहा तो वह ऐसी किसी भी आज्ञा की बात कर रहा था, जिसे उसके सुनने वाले ''हल्की'' या ''छोटी'' मानते होंगे। यानी वह कह रहा था कि परमेश्वर की हर आज्ञा महत्वपूर्ण है और हमें किसी भी आज्ञा को जानबूझकर नहीं तोड़ना चाहिए।

कोई चकित हो सकता है कि यीशु ने मूसा की व्यवस्था को मानने पर ज़ोर क्यों दिया जबकि कुछ ही सालों में उस व्यवस्था की जगह उसकी अपनी शिक्षा ने ले लेनी थी। उसका एक कारण यह था कि मूसा की व्यवस्था का सम्मान न करने वालों ने यीशु की आज्ञा का भी सम्मान नहीं करना था।[22] आज्ञा न मानने की आदतें नई वाचा में भी बनी रहनी थीं।

यीशु ने अपने कामों से ''छोटी से छोटी आज्ञा'' को तोड़ने वालों को न केवल दोषी ठहराया बल्कि उन्हें भी जो ''दूसरों को ऐसा करना'' सिखाते हैं। जब कोई जान-बूझकर व्यवस्था को तोड़ता है, तो आमतौर पर वह अपने कामों को सही ठहराने की कोशिश कर रहा होता है। शायद वह कह रहा हो, ''इसका कोई मतलब नहीं है सो हम इसे मानें या न मानें उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'' नमूना और बात के द्वारा वह दूसरों को भी व्यवस्था को नज़रअन्दाज़ करना सिखाता है। यीशु ने कहा कि ऐसा व्यक्ति ''स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा।''

आज्ञाओं का ''पालन करने और उन्हें सिखाने'' इस नमूने के विपरीत वह व्यक्ति है जो आज्ञाओं को ''मानता और सिखाता'' है चाहे वह ''बड़ी हो'' या ''छोटी।'' यीशु ने कहा कि ऐसा व्यक्ति ''स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।'' ''स्वर्ग का राज्य'' उस राज्य को कहा गया है जिसे यीशु ने कहा कि ''निकट आया है'' (4:17)। अन्य शब्दों में, वह कलीसिया जिसे वह स्थापित करने वाला [था]।[23]

यह कहने से यीशु का क्या अभिप्राय था कि राज्य के कुछ लोग ''छोटे'' कहलाएंगे और कुछ ''महान'' कहलाएंगे? आर. टी. फ्रांस ने सुझाव दिया है कि ''इसमें विचार शिष्यता की गुणवत्ता का है, न कि अन्तिम प्रतिफलों का।''[24] शब्दों का इस्तेमाल नाटकीय अन्तर के लिए होता है: *छोटी से छोटी* आज्ञा को तोड़ने वाला व्यक्ति *छोटा* कहलाता है, परन्तु इसके विपरीत करने वाला व्यक्ति यानी *महान* कहलाता है। हम इसकी प्रासंगिकता इस प्रकार बना सकते हैं। कोई भी जो परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं मानता और दूसरों को इसे तोड़ने की बात सिखाता है, परमेश्वर की नज़र में ''छोटा [सबसे बेकार]'' सिखाने वाला है। हमें ऐसे व्यक्ति को कलीसिया में सिखाने की अनुमति कभी नहीं देनी चाहिए। जो व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था को मानता और लोगों को इसे मानना सिखाता है परमेश्वर की दृष्टि में वह ''महान'' है। प्रभु की कलीसिया में हमें ऐसे ही सिखाने वाले की आवश्यकता है।

बहुत बुरे उदाहरण (आयत 20)

जब यीशु ने आज्ञाओं को तोड़ने और दूसरों को भी ऐसा ही करना सिखाने वालों की बात की तो उसके मन में वे कुछ लोग थे, जिन्हें यहूदी लोग गुरुओं के रूप में मानते थे। मसीह के अगले शब्द उसे सुनने वालों को आश्चर्यचकित कर देने वाले बल्कि स्तब्ध कर देने वाले होंगे: ''क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम्हारी धार्मिकता[25] शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे'' (5:20)। अनुवादित शब्द ''शास्त्री'' (*grammateus*) का मूल अर्थ ''जो लिखता है'' (*gramma* अर्थात ''जो लिखा गया है'')।[26] यीशु के समय में शास्त्री लोग व्यवस्था के व्यवसायिक छात्र और शिक्षक होते थे।[27] ''फरीसी'' यूनानी शब्द का लिप्यांतरण है जो उसका संकेत देता है जो ''अलग किया'' है।[28] फरीसियों ने अपने आपको अलग किया हुआ था और मूसा की व्यवस्था के हज़ारों कानूनी नियमों और कायदों और इससे जुड़ी परम्पराओं को मानने के लिए समर्पित किया था जब यीशु ने ''शास्त्रियों और फरीसियो'' कहकर बात की तो वह इस्राएल देश में सबसे पढ़े लिखे और सबसे उत्साही लोगों से बात कर रहा था। वे ''अपने स्वयं के और लोगों के अनुमान से धार्मिकता के नमूने थे।''[29] यीशु के सुनने वाले अवश्य चकित हुए होंगे कि ''हमारी धार्मिकता उनकी धार्मिकता से बढ़कर कैसे हो सकती है?''

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट के सुझाव पर विचार करें हमारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से ''डिग्री के बजाय किसम में'' बढ़कर होनी आवश्यक है। यीशु ने यह नहीं कहा था कि शास्त्री और फरीसी लोग 230 आज्ञाओं को पूरा कर रहे थे और इस कारण हमें 231 आज्ञाओं को पूरा करना आवश्यक है। बल्कि हमारी धार्मिकता के लिए उसकी इच्छा ''गहरी'' ''मन की धार्मिकता'' होना था।[30]

यीशु ने कई अवसरों पर शास्त्रियों और फरीसियों की कथित धार्मिकता के खोखलेपन को दिखाया है। लूका 18:9-14 में आप फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत देख सकते हैं, या आप मत्ती 23 अध्याय में यीशु की कठोर डांट को पढ़ सकते हैं। परन्तु आपको पहाड़ी उपदेश से आगे जाने की आवश्यकता नहीं है। अगले अध्याय में जब भी आप ''कपटी'' (6:2, 5, 16), शब्द को पढ़ें तो आप उसकी जगह ''शास्त्री और फरीसी'' शब्द लगा सकते हैं (तुलना मत्ती 23:13, 14, 15)।

अभी-अभी दिए अन्य हवालों से हम शास्त्रियों और फरीसियों की कई नाकामियां बता सकते हैं। उनका ध्यान नैतिक रूप में सही होने के बजाय औपचारिक और सांस्कारिक रूप में सही होने में अधिक रहता था। उनकी दिलचस्पी परमेश्वर के नियमों को मानने के बजाय मनुष्यों की परम्पराओं को मानने में अधिक थी (देखें मत्ती 15:3-6)। वे परमेश्वर के बजाय अपने आप में शान समझते थे वे अपने आप में सतुष्ट थे। उन्हें दूसरों की कोई परवाह नहीं थी।

परन्तु शास्त्रियों और फरीसियों का नाकाम होना एक कारण था कि वे अंदरूनी बातों को नज़रअदाज़ के लिए बाहरी बातों पर ज़ोर देते रहे (देखें मत्ती 23:25-28)। लूका 16:15 में यीशु ने उन से कहा, ''तुम तो मनुष्यों के साम्हने अपने आप को धर्मी ठहराते हो: परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।'' मत्ती 5 अध्याय के अन्तिम भाग के उदाहरणों में पाप की केवल बाहरी अभिव्यक्ति

को ही नहीं बल्कि उस अभिव्यक्ति के पीछे मन के व्यवहार को भी दोषी ठहराया जाएगा। यीशु ने केवल हत्या को ही गलत नहीं कहा बल्कि उस क्रोध को भी जो आमतौर पर हत्या का कारण बनता है, गलत कहा (मत्ती 5:21, 22)। उसने न केवल यह कहा कि व्यभिचार गलत है बल्कि यह भी घोषित किया कि वासना पाप है (आयतें 27, 28)।

मत्ती 5:20 पर दो टिप्पणियां देना उचित है। पहली, आयत 19 में यीशु ने उनकी बात की जो पहले से राज्य *में* हैं (''छोटे और बड़े'') जबकि आयत 20 में उसने राज्य में प्रवेश करने की बात की। राज्य/कलीसिया में प्रवेश करने के लिए आपको केवल कुछ बाहरी रूपों को मानना ही काफ़ी नहीं है (यह अंगीकार करना कि आप यीशु में विश्वास करते हैं और डुबकी ले लेना)। आपको ''मन से उस उपदेश के मानने वाले'' होना आवश्यक है ''जिसके सांचे में डाले गए थे'' (रोमियों 6:17)।

दूसरा, यहूदी मत के सबसे प्रभावशाली धार्मिक गुटों यानी शास्त्रियों और फरीसियों पर यीशु की आलोचनात्मक टिप्पणी ने उन शक्तिशाली अगुवे के साथ उसके झगड़ों के लिए मंच तैयार कर दिया। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए यह बात कहकर यीशु ने अपनी मृत्यु पर हस्ताक्षर कर दिए। यीशु ने सचमुच में उस धर्म के विरुद्ध जो केवल चमड़ी जितना गहरा है चेतावनी देने के लिए अपना जीवन लगा दिया।

सारांश

अपने अध्ययन में हम ने देखा है कि परमेश्वर के वचन के लिए यीशु के मन में बड़ा सम्मान था और हमारे मन में भी परमेश्वर के उस प्रकट वचन के लिए गहरी आस्था होनी चाहिए। अन्त में मैं सामान्य अर्थ में पुराने नियम के हमारे व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ बातें कहना चाहता हूं। यह पता चलने पर कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय पुराना नियम ''पूरा हो गया'' है और वह वाचा ''पूरी हो गई'' है कुछ लोग यह निर्णय लेते हैं कि उन्हें इसकी कोई आवश्यकता नहीं। वे इसे पढ़ते या इसका अध्ययन नहीं करते। परन्तु याद रखें कि पहाड़ी उपदेश व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के पूरा होने से थोड़ा पहले बताया गया था। यकीनन उसे मालूम था कि ऐसा ही है, पर उसने पुराने नियम के लिए अपने आदर और प्रेम को कम नहीं किया।

दो चरमों से बचना चाहिए। एक चरम यह कहता है कि ''पुराने और नये नियम में कोई फर्क नहीं है। वे आज मसीही लोगों पर समान रूप से लागू होते हैं।'' दूसरा चरम कहता है, ''आज मसीही लोगों के लिए पुराने नियम में कुछ नहीं है। हम इसे फैंक सकते हैं।'' यह सच है कि पुराना नियम परमेश्वर और यहूदियों के बीच की पुरानी वाचा का आधार था, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों के लिए इसका कोई महत्व नहीं है (देखें रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:11)। मत्ती 5 का अध्ययन जारी रखते हुए हम पुरानी वाचा और यीशु की बातों के बीच गहरा सम्बन्ध देखें। यीशु की अधिकतर शिक्षाओं की पृष्ठभूमि पुराना नियम ही है। आम तौर पर जो कुछ यीशु ने कहा उसे पूरी तरह से समझने के लिए समझ उसी पृष्ठभूमि से मिलती है।

पहली सदी के मसीही लोगों के पास पुराने नियम का वैसे बिगाड़ नहीं था जैसे आज कुछ लोगों के पास है। कई साल तक नये नियम के बनने तक, उनके पास जो ''बाइबल'' थी उसमें केवल पुराने नियम का धर्मशास्त्र था। यदि आपने नये नियम को पढ़ा है तो निश्चित रूप में आप

इस बात से प्रभावित होंगे कि पुराने नियम को कितनी बार दोहराया गया है। किसी ने कहा है कि ''पुराना नियम छुपा हुआ नया नियम है जबकि नया नियम प्रकट किया गया पुराना नियम।'' नये नियम पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए क्योंकि इसमें प्रभु के साथ हमारी वाचा की शर्तें हैं। साथ ही हमें ध्यान रखना चाहिए कि पुराने नियम की बेपरवाही न करें।

टिप्पणियां

[1]व्याकरण में ''अन्य पुरुष'' का इस्तेमाल तब किया जाता है जब *किसी के बारे में* बात हो रही हो। ''मध्यम पुरुष'' का इस्तेमाल जब होता है तब *किसी से* बात हो रही हो। ''प्रथम पुरुष'' का इस्तेमाल स्वयं बोलने वाले के लिए होता है। [2]यीशु ने ''तुम सुन चुके हो ... परन्तु मैं कहता हूं'' या इसके समान शब्दों का छह बार इस्तेमाल किया। परन्तु यदि तलाक पर शिक्षा (आयतें 31, 32) व्यभिचार पर चर्चा के भाग के रूप में थी (आयतें 27–30) तो केवल पांच उदाहरण हैं। [3]एक तीसरा विभाजन भी था जिसे ''लेख'' कहा जाता था। भजन संहिता की पुस्तक लेखों पर हावी थी इस कारण तीहरे विभाजन को कई बार मूसा की व्यवस्था, भविष्यवक्ताओं और भजनों के रूप में भी जाना जाता था (देखें लूका 24:44)। [4]ये शब्द *luo* (''खोलना'') से बना है, जिसे उपसर्ग *kata* (''के अनुसार'') से मज़बूत किया जाता है। [5]वाल्टर बाउर, ''एक ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर,'' चौथा व विस्तृत संस्क, विलियम एफ़. अर्डट और एफ़. विल्बर गिंगरिच द्वारा सम्पादित (शिकागो: दि यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1952), 415. [6]''मिटाना'' *katargeo* से लिया गया है जिसका अर्थ *kataluo* वाला ही है। [7]''न्यायिक नियम'' उन नियमों को कहा जाता है जो एक देश के रूप में चलाने के लिए इस्राएलियों को दिए गए थे। [8]तीहरा विभाजन ''प्रोबेबली डज़ नॉट एंटिडेट अक्विनस'' (डी. ए. कर्सन, ''मैथ्यू,'' *द एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंटी,* अंक 8 [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984], 143)। थॉमस अक्विनस 1225–1274 ईस्वी में हुआ एक रोमन कैथोलिक विद्वान था। [9]ज्योफ्री ब्रोमिले, थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट, abr. गर्हर्ड किटल फ्रैंडरिच, ट्रांस, ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, एब्रिज इन वन वॉलियम (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 867. [10]बाउर, 677.

[11]रोमियों 7 तथा अन्य स्थानों में पौलुस ने ध्यान दिलाया कि व्यवस्था ने वह उद्देश्य पूरा नहीं किया। समस्या व्यवस्था नहीं थी बल्कि मनुष्य जाति का बिगाड़ और शरीर की निर्बलता थी। [12]आर. टी. फ्रैंस, *दि गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1985), 114–15. [13]वही., 115. [14]KJV में ''jot'' है। [15]''Tittle'' है। ''टाइटल'' लातीनी भाषा से लिया गया शब्द है। यीशु लिखने में इस्तेमाल होने वाले बहुत ही छोटे चिह्न की बात कर रहा था। [16]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 635. इसकी तुलना ''e'' को ''c'' से अलग करने वाले छोटे अक्षर से की जा सकती है। [17]डी. एफ़. हडसन, *टीच योरसेल्फ न्यू टैस्टामेंट ग्रीक* (लंदन: इंग्लिश यूनिवर्सिटीज़ प्रैस, 1967), 166. [18]यदि यीशु व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को *मिटाने* आया होता तो वह उन सबसे मज़बूत प्रमाणों में से कुछ को मिटा रहा होता कि वह ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है। [19]हेरोल्ड फोउलर, *मैथ्यू वन,* बाइबल स्टडी टैस्टबुक सीरीज़ (जौप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 247. [20]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 44.

[21]''तोड़ना'' और ''मिटाना'' दोनों ही *luo* (''खोलना'') से लिए गए हैं। [22]यीशु की मंशा थी कि उसकी आज्ञाएं मानी जाएं (देखें मत्ती 7:26, 27)। [23]एलबर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेंट: मैथ्यू एंड मार्क,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 51. [24]फ्रांस, 116. [25]''धार्मिकता'' का अर्थ यहां ''सही करना'' है। विशेषकर यह शब्द व्यवस्था की आज्ञा मानने के लिए है। [26]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 82. [27]वे पहली सदी के फलस्तीन के ''व्यवस्थापक'' थे (मत्ती 22:35 से मरकुस 12:28 से तुलना करें)। [28]वाइन, 470. [29]मैकगर्वे, 53. [30]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ दि सरमन ऑन दि माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1978), 75.